ये अव्यक्त इशारे

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

24-11-2026

अब सेवा के, कर्म के भी बन्धन में नहीं आओ। हमारा स्थान, हमारी सेवा, हमारे स्टूडेन्ट, हमारी सहयोगी आत्मायें, यह भी सेवा के कर्म का बन्धन है, इस कर्म बन्धन से न्यारे अर्थात् कर्मातीत। जैसे ब्रह्मा बाप ने सदा न्यारे और प्यारेपन का बैलेन्स रखा। सबको अपनेपन की अनुभूति कराते भी हर एक का सम्बन्ध उस एक से (निराकार बाप से) जुटाया, ऐसे आप बच्चे भी सबको अपनेपन की महसूसता दिलाए आत्माओं को समीप ठिकाने पर पहुंचाने वाले बनो, तब कहेंगे बाप समान।

Experience the complete and perfect stage, the same as Father Brahma.

Now, do not have any bondage of actions in service. "My place, my service, my students, my co-operative souls...". These too are bondages of actions in service. Become karmateet, that is, free from any bondage of these actions. Father Brahma always kept a balance of being detached and loving. While giving everyone the experience of belonging, he enabled everyone to be connected with that One (the incorporeal Father). You children have to give everyone the feeling of belonging in the same way and show the destination to souls. You will then be said to be equal to the Father.